

## प्यारी मिनी और उसका सरप्राइज-2

“अन्तर्वसिना के सभी पाठको को नमस्कार !तीन-  
चार महीने कैसे निकले ... जैसे रोकट से चाँद पर  
पहुच गए, चार दिन में ही चार महीने पूरे हो गए...  
फिर अभी... [\[Continue Reading\]](#) ...”

Story By: munneraja (munneraja)

Posted: Thursday, October 13th, 2005

Categories: [कोई मिल गया](#)

Online version: [प्यारी मिनी और उसका सरप्राइज-2](#)

# प्यारी मिनी और उसका सरप्राइज-2

अन्तर्वासना के सभी पाठको को नमस्कार !

तीन-चार महीने कैसे निकले ... जैसे रॉकेट से चाँद पर पहुँच गए, चार दिन में ही चार महीने पूरे हो गए...

फिर अभी लगभग १५ दिन पहले ही एक दिन अचानक उसने चैट करते हुए मुझको अपने घर का पता दिया...

मैं दंग रह गया, मैंने पूछा- मिनी आज कैसे तुमने अपना पता मुझको दिया ?

तो फिर वो टाल गई।

स्त्री मन के रहस्यों का खजाना किन गहराइयों में है ये तो खुद विधाता भी नहीं जान सके तो मैं अदना सा इंसान क्या जानता ?

वो मेरे शहर की नहीं है।

मिनी ने बस इतना सा पूछा कब आओगे ?

मैंने कहा- रविवार को मेरे संस्थान की छुट्टी होती है, किसी काम से बहाने इस आने वाले इतवार को आ जाऊँ ?

तो मिनी ने हाँ कर दी और बोली- मैं अकेली ही घर में होऊँगी, तुम सीधे मेरे घर में आना और आने से पहले मुझको कॉल करना अपने मोबाइल से...

उसने अपना मोबाइल नंबर मुझको दिया और साथ ही साथ यह बताया कि एक सरप्राइज तुम्हारा इन्तजार कर रहा है।

मैं और भी ज्यादा उत्सुक हो उठा कि क्या सरप्राइज हो सकता है। कहीं कुछ उलटा सीधा तो नहीं है कुछ, आखिर यह नेट है।

लेकिन यदि मिनी के मन में कुछ मैल होता तो वो जो करती, अचानक ही करती फिर तो वो कुछ बताती भी नहीं।

मैं बहुत बेसब्री से रविवार का इन्तजार करने लगा। घर पर बोला कि संडे को अन्य शहर में मुझको स्पेशल क्लास लेने को बुलाया है, इसलिए मैं जा रहा हूँ रात को लेट हो जाऊंगा !

मैं कोई प्यारी सी गिफ्ट मिनी को देना चाहता था, मुझे और तो कुछ समझ आया नहीं, क्योंकि अभी तक मिले ही नहीं थे इसलिए बहुत अनिश्चय की स्थिति में मैंने एक डांसिंग पेयर का म्यूजिकल मेमोरी आइटम खरीदा... और अपनी कपड़ों के साथ पैक कर लिया।

और शनिवार रात को बस पकड़ कर मिनी के शहर रवाना हो गया, बहुत सुबह करीब ४ बजे जब मैं उसके शहर उतरा तो मैंने मिनी को कॉल किया तो मिनी ने बताया कि उसके घर तक कैसे पहुंचना है।

मैंने ऑटो किया और उसके मोहल्ले की गली के पास ऑटो को छोड़ दिया।

एक बार फिर मेरी हालत वो ही हो गई जैसे कि उसकी मेल पढ़ने पर हुई थी, मेरे पैर थरथराने लगे थे.....दिल था कि मेरे गले में धड़क रहा था।

मकान नंबर के आधार पर जब मैं मिनी के मकान के पास पहुंचा तो एक चेहरा खिड़की में से झांकता नजर आया और जैसे ही मैंने गेट को हाथ लगाया दरवाजा खुला और मिनी

बोली.... नीरज ?

मैंने कहा- हाँ मिनी ! मैं ही हूँ !

उसने मुझको अन्दर आने को बोला । मेरा दिल मेरे गले में अटक रहा था. पहली बार किसी लड़की से मिलने यूँ उसके घर गया था..... और वो भी नेट फ्रेंड से.....

उसने दरवाजा बंद किया, मिनी सशरीर मेरे सामने थी, रंग कुछ सांवला सा लेकिन आँखों में गजब का आकर्षण, शोख आँखें जबरदस्त निमंत्रण देती हुई ...., सुता हुआ शरीर ।

मैंने अपना ब्रीफकेस कुर्सी पर रखा, मिनी की ओर देखा, वो भी मुझे ही देख रही थी, मेरे हाथ ज़रा से उठे, उसके कदम बढ़े वो मेरे सीने से लग गई और मेरे हाथ उसके इर्दगिर्द बंध गए, उसका चेहरा साइड से मेरे सीने से कंधे पर चिपका हुआ था...

मैं उसके चेहरे को देखने लगा, कितना प्यारा....., कोमल....., निर्मल..... आँखें मुंदी हुई !

मेरी सांस उसके चेहरे पर टकराने लगी. मेरा मुँह उसके गालों पर आया और आँखें मुंद गई हम जाने कितनी सदियों के प्यासे एक दूसरे में खो गए । जाने कितना समय निकल गया कुछ पता ही नहीं !

अचानक वो चोंक कर मुझसे अलग हुई और बोली- नीरू, तुम फ्रेश हो लो, चाहो तो नहा भी लो, फिर कुछ खा पी लेते हैं ।

मिनी नाईट ड्रेस में थी ।

तो मैंने कहा- मिनी ! फ्रेश तो मैं हो लेता हूँ लेकिन मुझे नहलाओगी तो तुम ही, फिर तुम भी तो नहाओगी ना ! साथ ही नहा लेंगे ।

मिनी बोली धत्त्त शैतान कहीं के.....

फिर मैं फ्रेश होने चला गया।

फ्रेश होकर आया, फिर हमारी छेड़छाड़ शुरू हो गई, हम दोनों एक दूसरे के बदन पर यहाँ वहाँ हाथ लगाने लगे।

मिनी ने घर के बाहर वाली सारी खिड़कियों के परदे चढ़ा दिए।

मैं कभी मिनी को खींच कर किस कर देता, कभी उसके बोबे दबा देता कभी उसकी जांघों के बीच हाथ डाल देता !

वो भी कभी मेरे गाल पर कभी मेरे होटों पर किस कर देती, कभी मेरे गाल नोच लेती, कभी लंड पर हाथ मार देती !

हम पूरे घर में थिरकते फिर रहे थे अपने को सामने वाले से बचाने की झूठी कोशिश में लगे थे।

फिर अचानक ही मैंने एक हाथ से मिनी को जकड़ा और दूसरे हाथ से उसके नाईट ड्रेस के बटन खोलने लगा, मिनी मेरे हाथ से छूटने की कोशिश करने लगी, मैंने उसको दबोच लिया, वो प्लीज प्लीज ! करती रही और मैं उसके बटन खोलता गया, फिर मैंने कमीज को उतार कर कमरे में पलंग पर उछाल दिया। वो अपनी कोहनी से हाथ मोड़े अपने बोबे ढकने लगी, नाईट ड्रेस के कारण उसने ब्रा नहीं पहनी थी। मैंने उसके हाथ खींच कर सीधे कर दिए, उसका चेहरा गुलाबी हो गया, आँखें नशीली और आँखों में शर्म उतर आई...

सेब से डेढ़ गुना बड़े साइज के कसे हुए बोबे देख कर मैं मदहोश हो गया, मेरे दिल में हलचल मच गई. मैंने एक हाथ से मिनी को भींचा और दूसरे हाथ से उसके बोबे दबाने

लगा।

हम दोनों ही गरम होने लगे।

फिर मिनी एकदम से चुलबुली हो गई और फिर हमारे बीच में छीना झपटी होने लगी एक दूसरे के कपड़े उतारने को ले कर !

५-७ मिनट में ही हम सिर्फ अंडरविअर में थे। फिर मैंने मिनी को पकड़ा, उसको उठाया और सीधे गुसलखाने में ले गया, नल खोल कर बाल्टी में पानी चालू किया. और मिनी के होंटों पर अपने होंट रख दिए।

हमारी साँसे चढ़ने लगी .....

मैं एक हाथ से मिनी का बोबा दबा रहा था, उसके होंट चूस रहा था, और दूसरे हाथ से उसकी पीठ सहला रहा था और कभी कूल्हे।

मिनी का एक हाथ मेरी गर्दन को घेरे था, दूसरे हाथ से मेरे लंड को अंडरविअर के साइड से निकाल कर अपनी टांगो को थोड़ा सा चौड़ा करके पैंटी को थोड़ा सा साइड में सरका कर अपनी चूत पर रगड़ रही थी, मैं शादीशुदा होने और इतना सेक्स कर चुकने के बाद भी खुद को कण्ट्रोल करने में असमर्थ पा रहा था. मिनी लगभग मुझमें घुसने जैसी हालत में हो गई और कण्ट्रोल खोने लगा तो मैंने मिनी को खींच कर किसी तरह से अलग किया, वो तो अलग होने को ही तैयार नहीं थी।

अब हमारे अंडरविअर भी अलग होकर बाथरूम की शोभा बन गए।

मैंने मगगे से बाल्टी में से पानी लेकर मिनी पर डालना शुरू किया, और मिनी ने बाल्टी में से चुल्लू चुल्लू पानी मेरे ऊपर .....

हम जैसे जैसे भीगते गए और भी गरम होते चले गए।

पानी डालने की इस हरकत में हमारे अंग जिस तरीके से हिल रहे थे उसने हमें गर्म करना शुरू कर दिया।

लेकिन मैं कोशिश कर रहा था कि किसी तरीके से नहाने का काम पूरा हो जाये तो चुदाई का काम शुरू किया जाये। इसलिए छेड़ा छाड़ी से ज्यादा कुछ करने की कोशिश नहीं कर रहा था।

अचानक से मिनी आगे बढ़ी और मेरी गर्दन को कस कर बाँहों में जकड़ लिया और अपने होंट मेरे होंटो पर फिर से चिपका दिए. अब तो अंडरविअर भी नहीं पहने हुए थे इसलिए मेरा लंड मिनी की चूत पर ठकठकाने लगा. मेरे हाथ अपने आप पहले वाली स्थिति में आते चले गए एक बोबे पर और दूसरा उसकी पीठ से कूल्हों तक सरकने लगा. मैंने एक बार मिनी को अपने से दूर करने की कोशिश की लेकिन उसने अपने हाथों को और भी जोर से कस लिया. मेरी समझ में आ चुका था कि अब कुछ नहीं हो सकता मैंने किसी तरह से नल से निकलते पानी को बंद किया और शावर को धीमा चालू कर दिया. दोनों पानी के नीचे भीगते हुए एक दूसरे में घुस जाने की कोशिशों में लगे थे. फिर मिनी ने अपनी टांगो को उठा कर मेरी कमर के घेरे पर कस ली. अलग होने की अब ज़रा सी भी उम्मीद नहीं बची।

मैंने अपना बैलेंस बनाते हुए ५५ किलो की उस फूल की कली को अपनी बाँहों में कसे हुए किसी तरह से घुटनों के बल बैठा। अब मिनी लगभग मेरी गोद में थी। अपने कूल्हे मैंने मेरी एडियों पर रख लिए.....

अब एक हाथ किसी तरह से दोनों के बीच में डालते हुए मेरे तन्नाते लंड को पकड़ कर मिनी की चूत के छेद पर लगाया और मिनी के कूल्हों को दोनों हाथों में पकड़ कर मिनी से बोला- मिनी मैं तुम्हारे हिप्स पर जोर लगा कर लंड को चूत में एंट्री कर रहा हूँ, थोड़ा सा

कूल्हों को ढीला छोड़ो !

चूत का छेद काफी गीला हो चुका था, मैंने कोशिश की लेकिन व्यर्थ ।

दूसरी बार जोर लगाया फिर बेकार ! मैं समझ गया कि कोशिश बेकार है । उसको लिए-दिए फिर से बैलेंस बनाते हुए उठा और शॉवर बंद करके बेडरूम की राह चलने लगा. मिनी कभी मेरे होंट चूसती कभी जीभ, और कभी गर्दन पर दांत गड़ा कर चूसती ।

सारा पानी भाप बन कर उड़ गया और हमारे बदन भट्टी की तरह तप गए ।

बेडरूम में ड्रेसिंग टेबल पर से क्रीम उठाई ऊंगली में लगाई किसी तरह से वापस दोनों के बदन के बीच राह बना कर क्रीम मेरे लंड के सुपाडे पर और उसकी चूत के मुँह पर लगाई । कई महीने हो गए थे मिनी के साथ किसी लड़के ने धोखे से सेक्स किया था. उसके बाद आज वो मेरे से चुद रही थी, सो चूत थोड़ा सा कस गई थी ।

मिनी बोली- चलो ! बाकी का नहाना पूरा करो ।

क्या करता हुकुम मानना ही था. वापस गुसलखाने में आकर शॉवर चालू किया और मिनी को गोद में बिठाये मैं फिर से घुटनों के बल हो गया । दोनों के बदन के बीच में हाथ घुसाया और लंड को चूत के छेद पर सेट करके मिनी के कूल्हों पर हाथ से दबाव बनाया, मिनी ने अपनी टांगों को हरकत दे कर हल्का सा धक्का लगाया और लंड अपनी रानी में समाता चला गया. मेरे और मिनी दोनों के मुँह से आह, उह, उम्म, हाँ, हहूहः आवाजें आने लगी ।

उत्तेजना इतनी बढ़ गई कि हम दोनों ही एक दूसरे के होंटों पर दांत कस दिए तब होश आया और होंटों को हटा कर जीभ चूसने लगे लेकिन कभी कभी फिर भी एक दूसरे को काट लेते थे ।



मिनी बोली – राजा करो..... मेरे बुरी तरह से चढ़ चुकी है, और वो अपने चूतड़ चलाने लगी। मैं भी मिनी के हिप्स के नीचे हाथ लगा कर मिनी को ऊपर नीचे करने लगा। हम दोनों ही खूब मदहोश हो चुके थे और जोर लगा कर अपनी मंजिल को पाने के लिए यत्न करने लगे।

धीरे धीरे ओर्गास्म आने लगा हमारे हिलने हिलाने की रफ़्तार बढ़ने लगी- ऊऊह आया रानू..... मैं आया.....

मिनी भी बोली- हाँ राजा आओ ! मैं भी हुई रे ईईईए

मैंने अपना लंड तुरंत मिनी की चूत से निकाल बाहर किया और हाथ से दो चार रगड़ मारी फिर सारा पानी पिचकारी मार मार कर बहने लगा। थोड़ी देर हम यूँ ही चिपके रहे, फिर धीरे धीरे अलग हुए और एक दूसरे की आँखों में देखने लगे। मिनी की आँखे झुकी, मैंने मगगे से पानी लेकर मिनी पर डालना चालू किया। फिर हमने एकदूसरे पर साबुन मला, खूब मलमल कर झाग बनाए, खूब नहाए, खूब मस्ती की।

तब तक हम दोनों फिर सुरूर में आ चुके थे. मैंने मिनी को अपनी और खींचा, उसके बोबे हाथों में लिए और मुँह लगा कर पीने लगा। मिनी ने मेरा चेहरा अपने बोबों में भींच दिया। मुझको सांस लेने में कठिनाई होने लगी.. तो मुँह खोल कर सांस लेने लगा और जीभ घुमा कर निप्पल चाटने लगा. हाथों से मिनी का बदन सहलाता जा रहा था।

फिर नीचे घुटनों के बल बैठ कर मिनी की कमर को बाँहों में लेकर मिनी की नाभि में जीभ दे दी और जीभ से हरकत करने लगा। मिनी ने फिर से मेरा चेहरा भींच कर पेट पर चिपका लिया।

मैंने शॉवर बंद किया, मिनी को कमर से पकड़ कर अपनी गोद में उठाया और उसको लिए

हुए बेडरूम में आया और बिस्तर पर लिटा दिया ।

अब तक मुझे आये लगभग २.३० घंटे हो चुके थे. दीवार घड़ी ६ :३० बजा रही थी । समय पलक झपकते ही निकल गया कुछ पता ही नहीं चला । पेट में थोड़ी हलचल होने लगी । मैंने मिनी से कहा- पहले खाने को थोड़ा कुछ तैयार कर लेते हैं !

तो मिनी- बोली हाँ यार ! चलो तयारी करें ! खेल तो बाद में भी होता रहेगा ।

अचानक मुझे याद आया और मैंने ब्रीफकेस खोल कर मेमोरी आइटम मिनी को दिया....

मैंने सोचा- पता नहीं पसंद आयेंगे या नहीं.....

मिनी ने खोल कर देखा और मेरे होंठों पर किस किया- एकदम गर्म !

फिर मैंने मिनी से पूछा- मिनी, तुमने क्या सरप्राइज देने के लिए मुझको बोला था ?

तो मिनी ने कहा- बता ही दिया तो क्या सरप्राइज हुआ ! इन्तजार करो प्रियतम.....!

फिर हम लोग पोहे बनाने की तैयारी में जुट गए । मैंने आलू, मिर्च, अदरक आदि कतरे, मिनी ने मटर और पोहे भिगोये... बनाते बनाते ७ बज गए, मैं आश्चर्य कर रहा था कि ये पोहे इतने ज्यादा क्यों हैं, लेकिन चुप रहा ।

अचानक दरवाजे पर धीरे धीरे चार बार ठक ठक हुई, मेरा दिल एक दम उछल कर गले में आ गया । मेरा घबराया चेहरा देखकर मिनी बोली- क्या हुआ राजा ? घबरा क्यों रहे हो ? मैं देखती हूँ ना... !

और वो दरवाजे पर चली गई सिर्फ पैटी पहने हुए ही, लेकिन मैंने ध्यान ही नहीं दिया...

मैं बेडरूम की ओर लपका, रात की पैंट टांगो में चढ़ा ली कि बेडरूम के दरवाजे पर दो चेहरे नजर आये, मैं अकबकाया सा देखने लगा, मिनी हंसने लगी, बोली- नीरू इनसे मिलो .. ये स्नेहा हैं मेरी पक्की सहेली और तुम्हारा सरप्राइज.....!

सॉरी यार नीरू, एक बार फिर से मैं सॉरी बोलूंगी....

तुमको देखकर तो कोई भी कुर्बान हो जाये...

तुम सच में भोले हो....

मैं थोड़ा सा संयत होने लगा था ।

मैंने स्नेहा की ओर हाथ बढ़ाया मिलाने के लिए

तो स्नेहा की आँखें शरारत से चमक उठी ओर बोलते हुए मेरे गले से चिपक गई कि वाह मेरी सहेली को तो सब कुछ और मुझसे हाथ मिलाना ही .....

मेरे हाथ स्नेहा की पीठ पर बंध गए और पीठ से ही उसके चेहरे को बालों से खींच कर पीछे किया और होटों पर एक प्यारा किस किया.. और बोला- प्लीज स्नेहा !मुझको नोर्मल होने दो । ज़रा बैठते हैं ।

ओस में नहाए हुए गुलाब के फूल सा चेहरा और गदराया हुआ बदन !मेरे मन में खयाल आया कि ये तो सच में ही सरप्राइज है ।

इतने में मिनी पोहे हाफ प्लेट में डाल कर ले आई । हम तीनों बेड पर बैठ कर पोहे खाने लगे और मिनी ने बताया कि स्नेहा ने उसको किस तरह से देह शोषण का शिकार होने के बाद सहायता की । वो दोनों बहुत पक्की सहेलियां हैं इतनी कि दो जिस्म और एक जान, मैंने तुमको इसलिए नहीं बताया कि शायद तुम शातिर होंगे तो तुमको कोई फर्क नहीं

पड़ेगा ... लेकिन तुमने जो लिखा वैसे ही हो... खैर अब मेरी बात मानोगे ना... ?

मेरी प्रश्न भरी आँखों को देखकर वो बोली- आज हम तीनों एकसाथ रहेंगे ... मंजूर... ?

मैं बोला- मिनी, मेरी रानी ... यार ... मेरी नजरें स्नेहा पर अटकी थी ...

मिनी बोली- हाँ बिना हिचक बोलो राजा, बिना किसी परेशानी के हम आज से अलग नहीं है... !

देखो मिनी, मैंने कभी इस तरह से सेक्स नहीं किया है. एक लड़की को संतुष्ट करना अलग बात होती है, और इस तरह...

तो मिनी बोली- मेरे राजा हमने कौन सा इस तरह या उस तरह से किया है।

और हमने सोचा कि आज इस तरह से खेल आजमा कर देखते हैं... जब मैंने स्नेहा से तुम्हारी बात बताई तो उसने ही ये स्कीम सोची है।

अब तुमको मैं बता दूँ कि ये स्नेहा सरप्राइज क्यों है !

जैसे ही तुमने मुझको कॉल किया कि तुम शहर में आ गए हो तो तुमसे बात करके मैंने स्नेहा को फोन करके बता दिया, स्नेहा ने मुझको बोला कि तुम देखो, यदि आदमी ठीक लगे तो तुम मुझको बताना तो मैं थोड़ा सा लेट यानि ७ बजे के लगभग आऊंगी, और यदि आदमी चालू लगे तो तुरंत फोन करना तो मैं तुरंत आकर, अपन दोनों मिलकर एकदम से फुटा देंगे।

मैं एक हादसा पहले झेल चुकी हूँ और दूसरे किसी लफड़े में फंसना नहीं चाहती थी तो मैंने अपनी प्यारी पक्की सहेली स्नेहा को राजदार बनाया,

जैसे ही तुम फ्रेश होने गए तो मैंने स्नेहा को दूसरा कॉल किया और बोला कि ७ बजे आ जाना !

मेरे दिमाग में एक विचार कौंधा – मिनी एक बात मानोगी....

मिनी – क्या राजा ?

मैं- क्यों न हम खेल खेल में सेक्स करें ?

मिनी- कैसे..... ज़रा बताओ तो ?

मैं- देखो आज सुबह भी अपन खुद को बचाकर दूसरे को किस कर रहे थे, पकड़ रहे थे, दबा रहे थे तो क्यों न अब भी एसा ही करें .... जो ज्यादा बार ये सब करेगा तो वो जीता हुआ माना जायेगा और सेक्स में उसकी पसंद सबको माननी होगी.....

बोलो मंजूर... मैंने वैसे भी आज तक इस तरह दो के साथ सेक्स नहीं किया है तो मैं भी नोर्मल हो जाऊंगा तब तक...

मिनी, स्नेहा ने एक दूसरे की ओर देखा फिर दोनों ने मेरी ओर देखा हम तीनों की नज़रें एकसाथ मिली हमारे हाथ बढ़े और एकसाथ मिल गए।

हमने नियम तय किये कि कोई प्रहार नहीं करेगा, हाँ हाथ सामने लाकर धक्का दे सकता है, नाखून से नहीं खरोंचेगा-नोचेगा और कोई ऐसी चीज नहीं फेंकेगा जो चोट पहुंचा सकती हो ! किस करना, बोबे दबाना और लंड-चूत को छेड़ना स्कोर बनाएगा !

सब राजी हो गए. १५ मिनट का समय तय हुआ. और अब खुद को बचाते हुए हम लोगों को अपना स्कोर बनाना था।

रेडी गो ...

और धमाल शुरू हो गया, पहले पांच मिनट में मेरा स्कोर था ११ और मिनी व स्नेहा थी ७ और ८ पर. दोनों ने नजरें मिलाई और शैतानी पर उतर आई दोनों एकसाथ मेरे पर टूट पड़ी। मुझको खुद को बचाना मुश्किल हो गया. हम एक दूसरे के पीछे दौड़ रहे थे और खुद को भी बचा रहे थे. दोनों ने मुझको दोनों ओर से पकड़ लिया और मुझको दबाना, किस करना चालू कर दिया, मैंने भी उनको दबाना, भीचना चालू कर दिया. हमारे स्कोर तेजी से बढ़ रहे थे, खूब हंस रहे थे और गरम हो रहे थे।

दोनों ने मिलकर मेरी पैंट भी खींच डाली और नंगा कर दिया. मैंने ओब्जेक्शन उठाया कि ये स्नेहा कपड़ों में क्या कर रही है. तो मैंने और मिनी ने मिलकर स्नेहा के गुदाज जिस्म से उसके कपड़े भी खोल डाले।

१५ मिनट में हम खूब गरम हो गए, मेरा लंड तना हुआ भागने पर इधर उधर डोल रहा था और उन दोनों के बोबे भी.... ये देखकर हंस कर हम लोटपोट हो गए। तकिये और कुर्सी की गद्दियाँ भी हवा में उछल रही थी और अंत में किसने कितने पॉइंट्स बनाए गिनने की फुर्सत किसे रह गई थी....

हम तीनों ही बेड पर लस्त पस्त गिर गए। दोनों मेरी दोनों साइड में हो गई और मेरी और आकर मुझसे चिपक गई. एक होंटों को किस करने लगी और दूसरी गर्दन पर चूसने लगी, मैं इस दोहरे प्रहार के लिए तैयार नहीं था। मुझमें इतना करंट भर गया कि शायद चक्की की मोटर तक चल जाती मैंने किसी तरह से अपने मुँह को कहने की स्थिति में लाकर कहा- कि मेरी रानू जानू मुझ पर रहम करो यार, ऐसे तो मैं जल जाऊँगा, कुछ तो धीरे धीरे चलो ....

तो स्नेहा बोली- डरो मत हम लोग तुमको बहुत आराम से ही अन्त तक ले जायेंगे। सब आपस की बात ही है। तुम भी हमारे अपने हो अब तो.....

स्नेहा का बदन भरा हुआ और बोबे मेरी ९ इंच की हथेली में एक आने वाले थे उनको दबाने में खूब मजा आ रहा था, लेकिन यह समझ नहीं आ रहा था कि इन दोनों में से किसको क्या करूँ.....

दोनों ने शायद समस्या भांप कर मुझसे विचार कर के निर्णय लिया कि दो दो मिनट के लिए एक जाने को बाकी के दो फोरप्ले करेंगे. ताकि गरम भी खूब हो जाएँ और हालत भी काबू में रहें,

अब पहले मेरी बारी थी, एक ने मुँह की साइड ली और दूसरी ने जांघो की साइड और सहलाते, किस करते, चाटते हुए विपरीत दिशा में आती गई, थोड़ी देर में स्थिति उलट गई, मुँह वाली जांघो पर और जांघो वाली मुँह पर आ गई, मेरे शरीर में बिजली और गर्मी व उत्तेजना ने पूरा बदन लाल कर दिया, मैं जैसे तैसे खुद को कण्ट्रोल करने लगा, २ मिनट २ युग जैसे बीते, मेरी बारी जैसे तैसे खत्म हुई, चार हाथ, चार बोबे, दो जोड़ी होंट जब किसी के शरीर पर चल रहे हों तो कण्ट्रोल हो सकता है क्या ? बहुत ही मुश्किल काम है.....

फिर मिनी बीच में आ गई, वो ही क्रिया फिर से शुरू हुई, मैंने मुँह वाली साइड पकड़ी और स्नेहा ने जांघो वाली, स्नेहा उसकी चूत चाटने लगी, और मैं उसको किस करते गर्दन चूसते, बोबे चूसते नाभि में जीभ करते नीचे आने लगा और स्नेहा ऊपर की ओर आने लगी, मिनी उत्तेजना से छटपटाने लगी, मैंने उसकी चूत के चारों ओर होंट घुमाए, चूत को किस किया तो मिनी बोली- चाटो ना !

तो मैंने कहा- आज तो रहने दो, अगली बार जरूर चाटूंगा !

तो वो मान गई, लेकिन मैंने उसकी चूत को किस कई बार कर लिया, उसकी चूत ने पानी छोड़ना शुरू कर दिया ।

अब बारी आई स्नेहा की, उसके साथ भी ऐसी ही क्रिया चालू हुई मैं फिर मुँह से उसके नीचे आता गया, स्नेहा तड़पने छूटपटाने लगी, ये दो का फंडा था ही ऐसा कि उत्तेजना चरम पर चली गई, स्थिति वश से बाहर हो जाती है लेकिन ओर्गास्म जल्दी होता है और खूब तेज .... जब मैं स्नेहा की चूत तक आया तो इसकी चूत भी पानी छोड़ने लग गई थी. और मदहोश सुगंध छोड़ रही थी।

हम तीनों में से किसी के भी होश ठिकाने पर नहीं थे, और किसी के भी होश ठिकाने पर तो रह भी नहीं सकते थे, ये हम तीनों ने इस अनुभव से जान लिया।

मिनी बोली- स्नेहा पर चढ़ जाओ और शुरू हो जाओ ! और खुद ने स्नेहा के मुँह में मुँह डाल दिया. मैंने स्नेहा की टाँगे चीरी और बीच में बैठ कर लण्ड को स्नेहा की चूत के छेद पर रख कर अपना मुँह उसके बोबे तक लाकर चूसने लगा, दूसरे हाथ से उसके बोबे दबाने लगा और बदन भी सहलाने लगा। स्नेहा की हालत भी कण्ट्रोल से बाहर होने लगी, दोतरफा हमला हम में से किसी के भी बस का नहीं था। स्नेहा ने कूल्हे ऊपर की तरफ दबाये और मैंने लण्ड को नीचे दबाया तो लण्ड उसके बच्चेदानी के मुँह पर जा लगा, बेचारी स्नेहा तो मुँह से कुछ भी कहने या सिसकारी भी लेने कि स्थिति में नहीं थी, मिनी ने उसका मुँह खुद के मुँह से बंद कर रखा था, स्नेहा की आँखे एकदम बंद थी।

बस वो खुद के हिप्स तेज चला रही थी, लम्बी साँसे ले रही थी, और मेरा लण्ड उसकी चूत में सटासट चल रहा था, उसकी चूत इतनी गीली हो चुकी थी कि लण्ड को चलने में कोई दिक्कत नहीं हो रही थी। फिर मैंने उसके बोबों से मुँह हटा कर गर्दन चूसने लगा...

स्नेहा का मुँह खुल गया उसके हाथ मेरे पर से ढल गए और लम्बी लम्बी उम्म्म करने लगी !

मैं समझ गया कि स्नेहा झड़ चुकी है और एक से ज्यादा बार झड़ चुकी है और खूब जोर से



झड़ चुकी है।

मैंने अपनी रफ़्तार बढ़ाई और ८-१० धक्को में मैं भी आता चला गया हर धक्के पर उसके मुँह से सिसकारी निकल रही थी।

मैं स्नेहा पर पसर गया और मिनी को बोला- स्नेहा तो कभी की झड़ चुकी है।

मिनी को भी खूब चढ़ चुकी थी, उसकी आँखें मदहोश दिख रही थी और वो चुदना चाहती थी, मैंने स्नेहा को छोड़ा और मिनी को सीधा किया। मिनी को ऊपर से नीचे तक सहलाने लगा, उस के मुँह से ऊहूहू और उम्मम्म जैसे कुछ निकलने लगा, उसकी आँखें मुंदी हुई थी,

स्नेहा तो खुद ही हिलने की हालत में भी नहीं थी तो अब मैं ही मिनी से फोरप्ले करने लगा ताकि लण्ड वापस खड़ा हो। मिनी ने मुझको कस लिया मैंने भी मिनी को जोर से भींच लिया मेरे लण्ड में तनाव आने लगा। मैंने मिनी के बोबे भींचे और उसका चेहरा चाटने लगा, वो भी मुझको जगह जगह से चूमने लगी।

फिर उसने मुझको नीचे धकेला और मुझ पर चढ़ गई. मेरे पेट पर पैरों की ओर मुँह करके बैठ कर मेरे लण्ड को मुँह में चूसने लगी। लण्ड सख्त होने लगा, २ मिनट में तन गया, मैं अधलेटा होकर मिनी के बोबे दबाने लगा। फिर मिनी को खींच कर अपने पर लिया लिया और नीचे से उसकी चूत का छेद लण्ड पर सेट किया और नीचे से धक्के लगा कर लण्ड को अन्दर कर दिया।

मेरे मुँह से आआआआआ निकला और मिनी के मुँह से हाययय्यय !

अब तो रुकना बेकार था, मिनी ने ऊपर से रगड़ना चालू किया और मैंने नीचे से धक्के लगाने और जीभ मिनी के मुँह में दे दी, बोबे भींच लिए। मिनी पूरी रफ़्तार में थी जरा सी देर बाद मिनी ने अपने हाथ मेरी गर्दन के नीचे लाकर कस दिए और मैंने उसकी पीठ पर

अपने हाथ पूरी ताकत से कस लिए और जोर जोर से धक्के लगाने लगा, मिनी जोर से उम्म करते हुए ढेर हो गई उसकी साँसे लम्बी लम्बी चलने लगी और ज़रा सी देर में मेरे लण्ड में इतना तनाव आया कि मेरे वश से सबकुछ बाहर होता चला गया...

अचानक बरसात होने लगी तो आँख खुली, स्नेहा हाथ में जग लेकर पानी छिड़क रही थी मिनी भी जागी, घड़ी देखी तो १२ बज गए थे, हम तीनों एक दूसरे को देखकर हौले से मुस्कुरा रहे थे, फिर तीनों एकसाथ आपस में बंध गए, एक दूसरे को चुम्बन किया और सबने कपड़े पहने, बाल बनाए और कमरे को व्यवस्थित किया. फिर स्नेहा बोली- चलो खाना होटल में खायेंगे।

ठीक भी था कोई भी खाना बनाने की हालत में नहीं था. ओर्गास्म इतने जोरदार हुए थे कि हम सबके चेहरे एकदम मासूम लग रहे थे।

स्नेहा कार लाई थी, होटल में खाना खाया, स्नेहा ने वेटर को जाने क्या इशारा किया और बोली चलो घर चलें !

मैं काउंटर पर पेमेंट करने लगा तो मिनी बोली- ये लेंगे ! चलो ...

मैं समझ गया कि स्नेहा का रसूख काफी है। फिर घर पर आइसक्रीम खाने के बाद स्नेहा बोली- मेरा गिफ्ट ??

मैंने कान पर हाथ लगाए और जयपुर से भेजने का वादा किया ... उसके मुँह पर मुस्कराहट तैर गई।

उसने मुझको बस स्टैंड छोड़ा,

मेरे चेहरे पर बिछुड़ने की उदासी आ गई, तो उन दोनों ने कहा- नीरू एक बार हम दोनों

आयेंगे तुम्हारे शहर...

मैं उनकी यादों में खोया हुआ कब अपने शहर आ लगा, पता ही नहीं चला.

आज १५ दिन बाद भी वो अनुभूति ऐसे लगती है जैसे कल की सी बात हो...

[munneraja@gmail.com](mailto:munneraja@gmail.com)

